कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) [redacted]

(In Words) [redacted]

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में [redacted]

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ....चित्रकला....

परीक्षा का दिन ....शनिवार....

दिनांक ....30-3-19....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

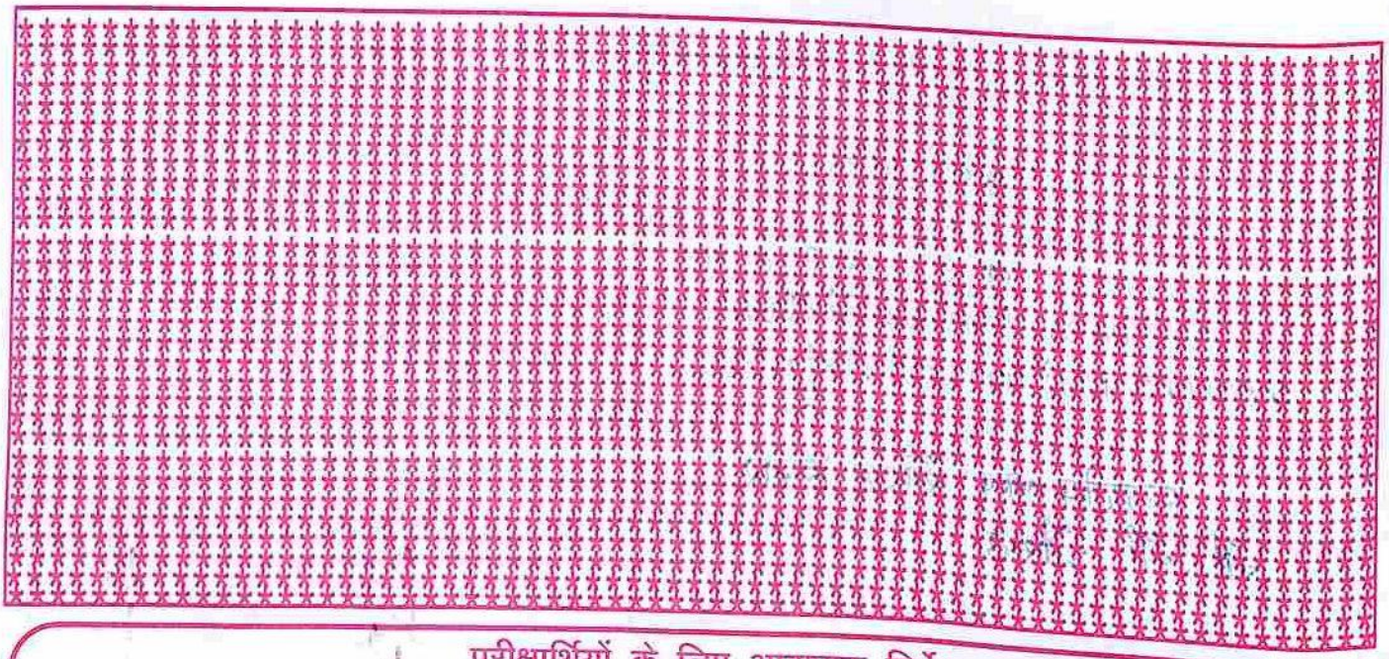

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कंम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कैर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(उत्तर)

(खण्ड – अ)

उत्तर ① चित्रकार केशू ने ।

उत्तर ② लैला – मजनू ।

उत्तर ③ राजा रवि वर्मा ।

उत्तर ④ 25 मार्च 1949 में ।

उत्तर ⑤ नारायण श्रीधर बेन्द्रे की ।

उत्तर (8) के. के हेब्बार (कट्टिंगेरी कृष्ण हेब्बार) ।

उत्तर (9) बुनकर , आरा मशीन चलाते ।

उत्तर (10) देवकीनन्दन शर्मा को ।

उत्तर (11) राम किंकर बैज ने ।

उत्तर (12) टॉयलेट ।

उत्तर (13) कम्पनी शैली ।

उत्तर (7) कमल सरोवर ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(खण्ड - ब)

उत्तर (13) विमलशाही मन्दिर माउण्ट आबू (सिरोही, राजस्थान) में है।
व इसका निर्माण 1031 ई. में गुजरात के सोलंकी राजा भीम देव (प्रथम) के मंत्री विमलशाह ने करवाया था।

उत्तर (14) कलकत्ता कला समूह की स्थापना प्रदोष दास गुप्ता तथा निरोदमजूमदार द्वारा की गई।

उत्तर (15) पेंग के कलाकार - सूजा, आरा।

उत्तर (16) राजस्थान के पद्मश्री सम्मान से सम्मानित दो चित्रकार -

(i) राम गोपाल विजय वर्गीय।
(ii) कृपाल सिंह शेखावत।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (17) देवी प्रसाद राय चौधरी के दो मूर्तिशिल्प -

(i) शहीद स्मारक ।
(ii) श्रम की विजय ।

उत्तर (18) द्वारका प्रसाद स

उत्तर (19) (i) वियोगी शिव ।
(ii) ~~मनभौर भुवन~~ । यक्ष तथा मेघ ।

उत्तर (20) स्व. गोपीचन्द मिश्रा के दो मूर्तिशिल्प -

(i) नौका विहार ।
(ii) यह बोझ नहीं मेरा भाई है ।

उत्तर (18) 1922 ~~मे~~ को महाराष्ट्र में हुआ था ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(खण्ड – स)

उत्तर (21) दक्षिणी कला शैली

उद्भव :– चौदवीं शताब्दी में दक्षिणी चित्र शैली का उद्भव हुआ तथा दो राज्यो की उत्पत्ति हुई –

(i) विजयनगर ।
(ii) बहमनी सल्तनत ।

दक्षिणी कला शैली :– 1347 में बहमनी सल्तनत का विकास हुआ था। यहाँ पर अल्लाउद्दीन बहमन शाह नाम के सुल्तान का राज था उसी के नाम से यह बहमनी सल्तनत का ~~उद्भव हुउ~~ नाम पड़ा। यहाँ के सुल्तान के ईरान से अच्छे संबंध थे। इसी कारन यहाँ ईरानी प्रभाव वाली कला उत्पन्न हुई जिसे दक्षिणी चित्रशैली / कला शैली के नाम से जाना गया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (22)

कम्पनी शैली

कम्पनी शैली के प्रमुख केन्द्र :- पटना, चेन्नई, मुर्शिदाबाद, अवध, मद्रास, कोलकता आदि है।

कम्पनी शैली के प्रमुख चित्रकार :- थॉमस विलियम, विलियम हॉजेस, विलियम डेनियल, विलियम सिमासिम, भवानीदास, एमिली ईडेन, चार्ल्स डी ओली, कर्नल स्मिथ, टॉड, हेटर आदि प्रमुख है।

उत्तर (23)

मृणालिनी मुखर्जी के मूर्तिशिल्प

(i) पोप स्केप।
(ii) वन राजा।
(iii) जीव जन्तु।
(iv) जानवर आदि जंगलो की वस्तुओ के चित्र अधिक बनाए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर 25 उषा रानी हूजा का जन्म 18 मई ~~1926~~ 1923 को दिल्ली में हुआ था।

(खण्ड - द)

उत्तर 27 महाबलीपुरम की स्थापत्य कला

(i) महाबलीपुरम के प्रमुख मूर्तिशिल्पो में :- त्रिमूर्ति गंगावतरण, सप्त रथ, वराह, दुर्गा आदि प्रमुख है।

(ii) स्थापत्य कला :- यहाँ की स्थापत्य कला पत्थरो व चट्टानो को काट कर बनाई गई है। ~~प~~ चट्टानो में अद्भुत अंलकरण किया गया है यहां के शिल्प आकर्षक व अंलकरण बनाए गए है जैसे -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) गंगावतरण :-

~~अंगावरम~~ गंगावतरण मूर्तिशिल्प महाबलीपुरम का सबसे प्रमुख मूर्तिशिल्प है। यह ~~एक~~ खुल आसमान में खड़ी चट्टान पर बनाया गया है। यह मूर्तिशिल्प 98 इंच लम्बा है इस शिल्प को तीर्थम तथा भागीरथी की तपस्या के नाम से जाना जाता है। यह मूर्तिशिल्प बहुत अलंकरण रूप से बनाई गई है इसमे नगो, गजो, लोगो, पशु - पक्षियो का हाथ जोड़े खड़ा किया गया है। तथा इसके ~~एक~~ गंगा को एक धारा से दो भागो में बाँट गया है। जिसे सभी लोगो देख रहे है इसमे एक तरफ भागीरथी को तथा दूसरी तरफ एक बिलाऊ को मूर्त रूप दिया गया है।

अतः महाबलीपुरम की स्थापत्य कला बहुत ~~अंक~~ अलंकारित रूप से अलंकरत है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (Q8)

पहाड़ी चित्र शैली

पहाड़ी चित्र शैली के विशेषताए निम्न है जैसे -

(i) भवन चित्रण ।
(ii) प्रकृति चित्रण ।
(iii) पशु पक्षी चित्रण ।
(iv) वाद्ययंत्र
(v) पात्रए ।
(vi) वेशभूषा ।
(vii) विषय व हाशिए ।

(i) भवन चित्रण :-

पहाड़ी चित्रशैली में भवनो को सफेदी से रंगा गया है तथा ऊपर भवनो में आलो या ताखो को भी बनाया गया है। जिससे की भवन के अन्दर से बाहरी दृश्य देखा जा सके ।

(ii) प्रकृति चित्रण :-

पहाड़ी चित्रशैली में भवनो को प्रकृति को बहुत आकर्षक रूप से सुन्दरता के साथ हरा भरा चित्रित किया गया है । जैसे "साधु व कृष्ण" चित्र में पृष्ठभूमि को दर्शाया गया है ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iii) पशु चित्रण :-
इस शैली में पशु चित्रण में विभिन्न पशु को चित्रित किया गया है।

(iv) वाद्ययंत्र :-
इस चित्र शैली मे वाद्ययंत्रो मे मंजीरा, झांझ, वीणा, सितार आदि को विशेष रूप से चित्रित किया गया है।

(v) पात्र :-
इस चित्र शैली में पात्र के रूप में राधा-कृष्ण को नायक-नायिका के रूप में चित्रित किया गया है तथा सभी पात्र उचित है।

(vi) वेशभूषा :- इसमें वेशभूषा मे मुगल प्रभाव दिखाया गया है। स्त्री को लहंगा चोली व पुरुष को लम्बे जामे में चित्रित किया गया है।

(vii) विषय व हाशिए :-
पहाड़ी चित्रशैली मे बारह-मासा, राग-रागिनी, नायिका भेद आदि विषय महत्वपूर्ण है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

हाशिए लाल रंग से पतले पट्टीनुमा बनाए गए हैं। तथा कहीं-2 पीले रंग से बनाए गए हैं। तथा ऊपर ठाकरी लिपि से लेख भी लिखा गया है।

उत्तर (29)

मेवाड़ शैली

(i) परिचय :- मेवाड़ शैली राजस्थान की सभी शैलियों में प्रमुख है। मेवाड़ का दूसरा नाम मेदपाट सबसे भी है।

(ii) उपशैलियां :- मेवाड़ शैली की उप शैली उपशैलियो में उदयपुर, नाथद्वारा, प्रतापगढ़ शामिल किए गए हैं।

(iii) उद्भव व विकास :-

(अ) महाराणा कुंभा के समय :- मेवाड़ शैली में महाराणा कुंभा का विशेष योगदान है। कुम्भलगढ़ के दुर्ग व राजप्रसाद महाराणा कुंभा के योगदान को चरितार्थ करते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ब) महाराणा सांगा के समय :- मेवाड़ शैली महाराणा सांगा के समय भी विकसित हुई मुगलो के संघर्ष के बावजूद बावजूद महाराणा सांगा ने मेवाड़ शैली का विकास किया ।

(स) [महाराणा प्रताप के समय :- महाराणा प्रताप ने मुगलो से संघर्ष किया तथा जिससे चित्तौड़ ध्वस्त हो गया]

(द) महाराणा उदयसिंह :- मुगलो से संघर्ष के कारण चितौड़ ध्वस्त हो गया जिसके बाद महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर की स्थापना की ।

(ह) महाराणा प्रताप के समय :- उदयपुर की स्थापना के बाद प्रताप ने छप्पन की पहाड़ी को चावड की राजधानी बनाया ।

(य) महाराणा जगत सिंह के समय :- मेवाड़ शैली महाराणा जगत सिंह के समय अधिक विकसित हुई क्योकि 1605 में चासिरुद्दीन द्वारा कृत रागमाला चित्रमाला चित्रावली को चित्रित किया गया । इसके समय मे कृष्ण विषय चित्र अधिक

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बने थे। शाहबुद्दीन द्वारा कृत 1648 मे "भगवत पुराण" तथा मनोहर द्वारा 1649 में गीतगोविन्द तथा रामायण तथा 1650 ई. में सूरसागर चित्रित किया गया। तथा अनेक चित्र चित्रित किए। इस कारण जगत सिंह का समय स्वर्णकाल कहा जाता है।

(२) महाराणा राजसिंह के समय :- महाराणा राजसिंह के समय शाहबुद्दीन द्वारा सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'भ्रमरगीत' की रचना की गई। इस समय में कृष्ण विषयक चित्रो को अधिक बनाया गया।

तथा कृष्ण के चित्रो को पीछे कपडे पर बनाए गए चित्र पिछवाई चित्र कहलाए।

अत: मेवाड़ के विकास में अनेको राजाओ का योगदान रहा।

विशेषताएँ

(i) नारी आकृतियां :- छोटा कद, छोटी चिबुक वेशभूषा लहंगा व पारदर्शी दुपट्टा तथा सुन्दर फूलो व फूदनो से सजी चोटी / वेणी तथा तंग कंचुकी।

(ii) पुरुष आकृतियां :- कद लम्बा, सुन्दर पगड़ी व लम्बे जामे में चित्रित है। नुकीली आंखे, लम्बी नाक

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) आलेखन :- आलेखन स्थान पर नायिका को विभिन्न भागो मे बाटकर चित्रित किया गया पहले स्थान पर श्रृंगारिक नायिका, दूसरे भाग में वासक सज्जा नायिका तथा तीसरे भाग में परिचारिकाओ से घिरी नायिका चित्रित की गई है।

(iv) हाशिए :- मेवाड़ शैली मे लाल हिंगुल तथा सिंदूरी हिंगुल रंग से हाशिए बनाए गए है।

(v) विषय :- रागमाला, बारहमासा, गीत-गोविन्द, रामायण, कृष्ण विषयक राग-रागिनी, आदि विषय है।

(vi) चित्रकार :- मेरू, नासिरूद्दीन, शाहबुद्दीन कृपाराम, मनोहर आदि।

(vii) प्रकृति चित्रण :- इसमे वास्तु व वनस्पति चित्रण में फल, फूल, पेड पौधो को चित्रित किया गया है तथा तीतर, मोर, बाज आदि पक्षियो को चित्रित किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (30)

अवनीन्द्रनाथ टैगोर

जीवन परिचय :-

* अवनी बाबू का जन्म 1817 ईस्वी में जोरासांकू में जन्माष्टमी के दिन देदीप्यमान नक्षत्र में हुआ। अवनी बाबू की आरम्भिक शिक्षा यहीं पर हुई तथा उसके बाद, अंग्रेजी व फारसी का अध्ययन घर पर किया। इनके पिताजी गुणेन्द्रनाथ, दादाजी गिरीन्द्रनाथ, चाचाजी ज्योतिन्द्रनाथ तथा रवीन्द्रनाथ से कला साहित्य व संगीत की शिक्षा ग्रहण की। जिस समय इन्होने चित्रकारी करना सिखा तब उस समय चित्रकार यूरोपीय शैली में चित्रकारी करते थे। इन पर दो चित्रकारो का व्यापक प्रभाव पड़ा जिनमें इटालियन चित्रकार गिलहार्डी व ब्रिटिश चित्रकार पामर शामिल है प्रारम्भ में इन्होने अपने चाचा रवीन्द्रनाथ की प्रसिद्ध पुस्तक "चित्रगंदा" पर आधारित चित्र बनाए।

प्रमुख चित्र :-

* आरम्भ में इन्होने यूरोपीय शैली व भारतीय शैली को मिलकर चित्र बनाया जिसमें "शुक्लाभिसार" प्रमुख है। उसके बाद पूर्ण भारतीय चित्र शैली में चित्र बनाना आरम्भ किया जिनमे "अभिसारिका", "बुद्ध व सुजाता" आदि चित्र प्रमुख है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

1901 - 1905 के मध्य "शाहजहाँ के अन्तिम दिन तथा "बिल्डिंग ऑफ ताज" इनके इस काल के चित्र है। तथा 1905 में बना सबसे प्रमुख चित्र "भारत माता" इनका सबसे प्रमुख चित्र है। जिसे वाश पद्धति से बनाया गया है।

उत्तर (24) चौमुखा मन्दिर :- चौमुखा मन्दिर रणकपुर का सबसे प्रमुख मन्दिर है यह जोधपुर में स्थित है। इसका निर्माण 1439 ई. में किया गया था। इसका निर्माण करवाने वाले धरणाशाह व रत्नाशाह नामक दो भाई थे। इसके निर्माण में 60 वर्ष लगे थे। इसकी दीवारों पर तथा फर्श पर सेवाड़ी का पत्थर को प्रयोग मे लिया गया। इसमें 85 शिखर 1444 स्तम्भ है। जैन तीर्थंकर आदिनाथ को यह मन्दिर समर्पित है। इस मन्दिर को खम्भो का अजायबघर त्रैलोक्य विहार त्रिभुवन संपुजन आदि अनेको नामो से जाना जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (26)

मुगल कला के विषय

मुगल कला मे अनेक विषयो का उल्लेख किया गया शासक के साथ विषयो में भी परिवर्तन होता रहा जैसे

~~अकबर~~

① बाबर के समय :- बाबर के समय 1526 – 30 मे बाबर नामा / तुजुक ए-बाबरी नामक आत्मकथा का वर्णन किया गया।

② हुमायूँ के समय :- हुमायूँ के समय 1530 – 56 मे दास्तान – ए – अमीर हम्जा / हम्जानामा नामक चित्रग्रंथ को चित्रित किया गया।

③ अकबर के समय :- अकबर के समय ऐतिहासिक भारतीय अभारतीय तथा व्यक्ति / शबीह चित्रो को चित्रित किया गया।

~~जहाजाहाँ के समय :- जहाजाहाँ के समय~~

④ जहाँगीर के समय :- इसके समय पशु – पक्षी के चित्र बहुतायत से बने जिनमे "शेख फूल सूफी संत", ~~ब~~ टर्की कोक व बाज प्रमुख है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(5) शाहजहाँ के समय :- इसके समय स्थापत्य कला ज्यादा बनाई गई तथा जिसका उदाहरण ताजमहल है।

अत: मुगल कला में पशु-पक्षी भारतीय, अभारतीय, दरबारी, शबीह आदि चित्र अधिक बने हैं जिनमे —

(i) अभारतीय चित्र :- खमसा निजामी, ~~रज्मनामा~~

(ii) भारतीय चित्र :- रज्मनामा, पंचतंत्र, नल दमयन्ती, रामायण।

(iii) ऐतिहासिक चित्र :- हम्जानामा, बाबरनामा, तैमूरनामा आदि।

(iv) शबीह या व्यक्ति चित्र :- राजा पृथु, आदि।

समाप्त

BSER/1652019